http://manojcomicsworld.blogspot.in/
मनोज
कॉमिक्स
संख्या 801 मूल्य 6.00
मनहूस
बंगला

http://manojcomicsworld.blogspot.in/

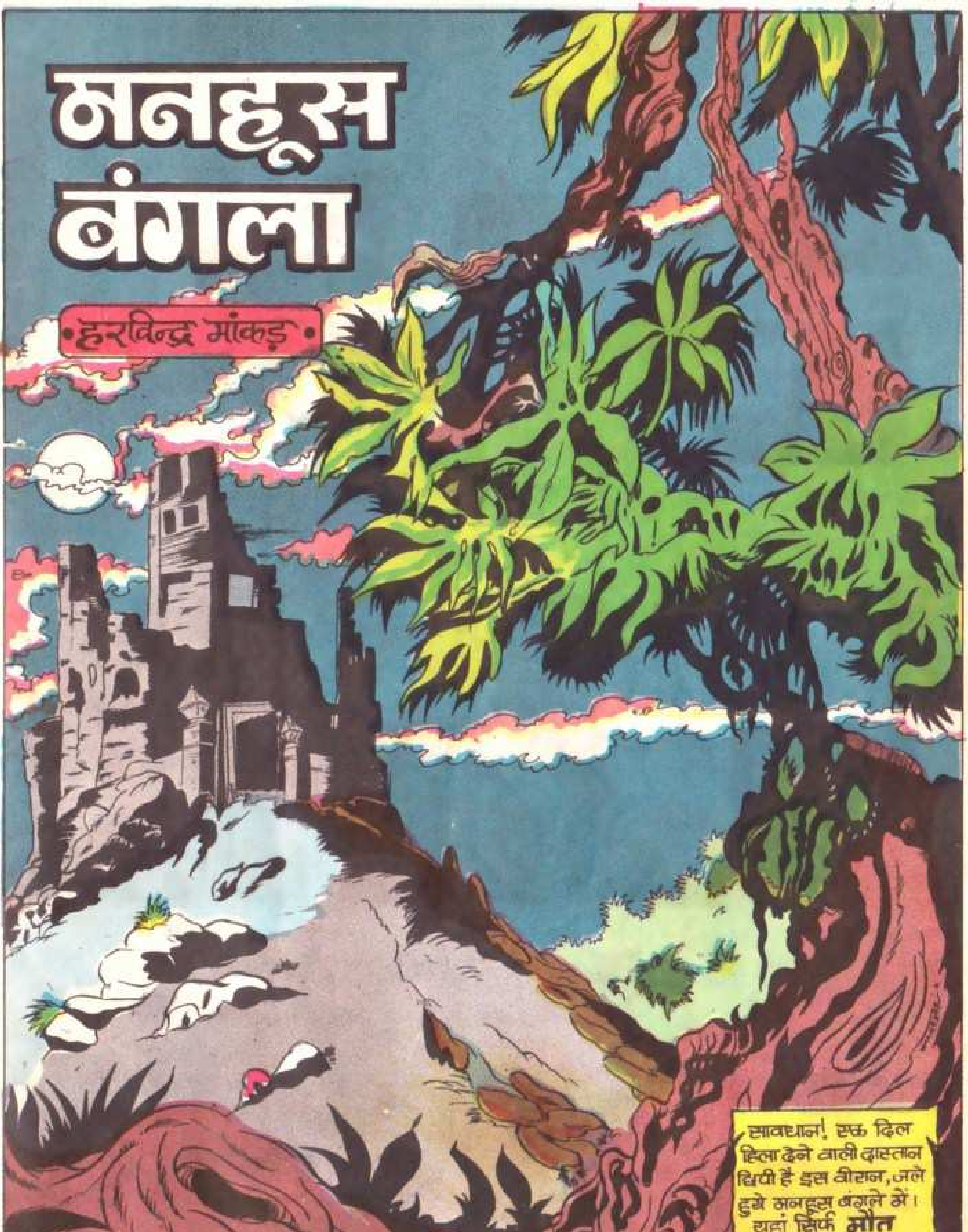

http://manojcomicsworld.blogspot.in/

http://manojcomicsworld.blogspot.in/

http://manojcomicsworld.blogspot.in/

http://manojcomicsworld.blogspot.in/

उफ! यह चमगादड़...!
चीं... चीं...चीं...
अभी भी वक्त है काले, मेरी मान और लौट चल।
तभी–
ठक... ठक... ठक
उफ! इस मनहूस जगह पर यह किसके चलने की आवाज है?
यह चलने की आवाज कहाँ से आ रही है।
अगले क्षण–
आऽऽऽ काले।
क...क... कौन है?
क... कौन हो तुम?
???
घबराइये नहीं साहब, मैं इस बंगले का चौकीदार हूं। आप लोग ठीक मौके पर आये हैं।
क्या मतलब है तुम्हारा?
साहब, मैंने अभी-अभी बंगले में एक गुप्त तहखाना देखा है, जिसमें दौलत के ढेर लगे हैं।
???

http://manojcomicsworld.blogspot.in/

सुनो दोस्त ...!
...ओए-
आई...ई...ई...!
तभी शिंदे कुछ पूछने के लिए साये की ओर मुड़ा...
क्या हुआ शिंदे?
व... वह उधर... सीढ़ियों के पास।
हे भगवान! यह क्या है?
यह सब क्या है? कौन है तू?
बोल हरामजादे, चुप क्यों खड़ा है?

http://manojcomicsworld.blogspot.in/

http://manojcomicsworld.blogspot.in/

http://manojcomicsworld.blogspot.in/

http://manojcomicsworld.blogspot.in/

http://manojcomicsworld.blogspot.in/

http://manojcomicsworld.blogspot.in/

http://manojcomicsworld.blogspot.in/

http://manojcomicsworld.blogspot.in/

http://manojcomicsworld.blogspot.in/

http://manojcomicsworld.blogspot.in/

http://manojcomicsworld.blogspot.in/

http://manojcomicsworld.blogspot.in/

http://manojcomicsworld.blogspot.in/

http://manojcomicsworld.blogspot.in/

http://manojcomicsworld.blogspot.in/

http://manojcomicsworld.blogspot.in/

http://manojcomicsworld.blogspot.in/

... किसी तरह विली शहतीर के नीचे से निकला...
मैं जल्दी ही तहखाने में न पहुंचा तो पूरी तरह से जमकर मर जाऊंगा।
हई...ई...ई
...सीढ़ियां उतरते हुए उसका बैलेंस बिगड़ा और...
धड़ाम
धाड़
आह!

...उधर वह तीनों विली के आवास पर पहुंच चुके थे...
यह गाड़ी तो विली साहब की है।
फिर तो ये अवश्य ही विली के साथी होंगे। पकड़ लो इन्हें।
...अगले पल...
अपना भला चाहते हो तो अपने आपको हमारे हवाले कर दो।
पुलिस?
भागो!
...तीनों पलटकर वापस गाड़ी की ओर भागे...
रुकजाओ।
...उनको रुकता न देखकर...
कायर।
...अगले पल...
आई... ई...ई...!
आह!
आह!
धांय
धांय
धांय

...फिर अगले दिन पुलिस को किसी तरह विली के उस बंगले की खबर लग गई और जब वह विली की तलाश में उस जल चुके क्षतिग्रस्त बंगले में पहुंची...
ओह! लगता है, विली अपने पूरे परिवार सहित जल मरा है।
फिर वहां एक सिपाही को तैनात करके पुलिस वापस चली गई...
...विली को तीन दिन बाद होश आया। शीशे में अपनी हालत देखकर उसे रोना आ गया...
ओह गॉड! तूने मुझे मौत क्यों नहीं दे दी।
...तभी उसे खाली पेट में आग-सी लगती महसूस होने लगी...
ओह! पता नहीं मैं कितने दिन से भूखा हूं। भूख के मारे मेरी आंतें ऐंठ रही हैं। मेरी भूख कैसे मिटेगी? क्या मैं भूख से तड़प-तड़प कर मर जाऊंगा?
उफ! यह दौलत के अम्बार मेरे किस काम के। इनके होते हुए भी लोग मेरी सूरत देखते ही मुझसे दूर भागेंगे...

http://manojcomicsworld.blogspot.in/

http://manojcomicsworld.blogspot.in/

http://manojcomicsworld.blogspot.in/